International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

हिंदी उपन्यासों पर आधारित हिंदी फिल्मों का अनुशीलन : ट्वेल्थ फेल उपन्यास के संदर्भ में

साक्षी[1] प्रो. उषा पाठक[2]

[1]शोध छात्रा, हिंदी तथा आधुनिक भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, ईमेल - sakshi.hindi94@gmail.com & 8756568821

[2]प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, ए. पी. सेन गर्ल्स मेमोरियल कॉलेज, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, ईमेल pathakusha651@gmail.com

सारांश
मानव मस्तिष्क ने सदैव प्रगति के पथ पर चलते हुए नवीनता को तलाशने की कोशिश की और सदैव उस नवीनता में मनोरंजन को भी शामिल किया है। मनोरंजन के रूप में ही फिल्मों का भी आविष्कार हुआ है और यह फिल्में हमारे साहित्य और समाज को दर्शाती है। इसलिए महावीर प्रसाद द्विवेदी ने "साहित्य को समाज का दर्पण कहा है।" भारतीय सिनेमा और हिंदी साहित्य का बहुत पुराना और बहुत गहरा संबंध रहा है। सन 1913 से ही भारतीय सिनेमा और साहित्य का संबंध चल रहा है। क्योंकि इसी वर्ष रविंद्रनाथ टैगोर की गीतांजलि के लिए नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ तो दूसरी तरफ राजा हरिश्चंद्र दादा साहेब फाल्के द्वारा निर्देशित फिल्म जो राजा हरिश्चंद्र की कथा से ली गई, पहली मूक फिल्म बनी। इससे पहले भी 1912 में पुंडलिक फिल्म का प्रदर्शन हुआ था। सन 1913 में भारत में भारतीय फिल्म का श्री गणेश हुआ, जिसके जनक थे, मराठी भाषी घुंडीराज गोविंद फाल्के पुष्प (दादा साहेब फाल्के) और फिल्म थी, राजा हरिश्चंद्र। इससे यह पता चलता है कि जब भारतीय साहित्य विश्व में प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहा था। तब साहित्य के माध्यम से उस समय सिनेमा जगत भी अपनी जमीन तलाशने में लगा था।
आज 100 साल बाद भी बहुत सा साहित्य रचा गया। जिस पर बहुत सी फिल्में भी बनी और बहुतों को पुरस्कृत भी किया गया। सिनेमा जगत में कई फिल्म ऐसी रची गई जिसकी पृष्ठभूमि हिंदी साहित्य से ली गई और वह फिल्में दर्शकों को पसंद भी आई। जैसे गोदान उपन्यास पर 1963 में बनी फ़िल्म 'गोदान', चित्रलेखा उपन्यास पर 1941 और 1964 में बनी फ़िल्म 'चित्रलेखा', गबन उपन्यास पर 1966 में बनी फिल्म 'गबन', कोहबर की शर्त उपन्यास पर 1982 में बनी फ़िल्म 'नदिया के पार', सूरज का सातवां घोड़ा उपन्यास पर 1992 में बनी फिल्म 'सूरज का सातवां घोड़ा', काशी का अस्सी उपन्यास पर 2018 में बनी फिल्म 'मोहल्ला अस्सी'।
इस तरह से विश्व पटल पर यदि झांक कर देखा जाए तो सिनेमा जगत ने साहित्य के माध्यम से अपना कद बढ़ाया है और दर्शक के हृदय पटल पर अपना स्थान बनाने में कायम भी रहा है। साहित्य भले ही कुछ लोगों तक पहुंचा हो लेकिन वही साहित्य फिल्मों के माध्यम से जन-जन तक पहुंचता है और लोगों द्वारा पसंद भी किया जाता है। जब पहली बार 1913 में आलमआरा लगी थी, तब भीड़ को नियंत्रित करने में के लिए पुलिस को बुलानी पड़ी।
इसी फिल्म और उपन्यासों के श्रृंखला में कुछ फिल्में जैसे 1936 में प्रेमचंद द्वारा प्रकाशित गोदान उपन्यास हिंदी की महानतम कृतियों में से एक है। इस उपन्यास में ग्रामीण समाज को प्रमुख स्थान तो शहरी को गौण स्थान पर रखा गया है। वहीं दूसरी तरफ गबन उपन्यास में मध्यवर्गीय समाज की इच्छा, आकांक्षा और उनकी समस्याओं का बखूबी वर्णन करते हैं। ट्वेल्थ फेल उपन्यास जो युवा लेखक अनुराग द्वारा लिखा गया है, जो उपन्यास युवा पीढ़ी को प्रेरित करने में कोई कसर नही छोड़ती है। इसमें कथाकार ने नायक के संघर्ष को दिखाया है कि कैसे वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में हर संभव प्रयास करता है और सफल भी होता है। लेकिन इसके आगे – पीछे भी कई ऐसी घटनाएं होती है। जिसका विश्लेषण करना इस शोध पत्र का उद्देश्य है। लेखन चाहे उपन्यास का हो या कहानी का लेखक का एक व्यक्तिगत कर्म होता है जो स्वांत सुखाय के लिए होता है। युवा पटकथाकार और कवि नीलय उपाध्याय का नजरिया है " बदलाव दर्शकों के रुचि को देखते हुए आते हैं क्योंकि रुचि बदली है इसलिए फिल्मी लेखन में बदलाव आया है। अब युवा दर्शकों को ध्यान में रखकर फिल्में बन रही हैं साहित्यकार को यह ध्यान रखने की जरूरत नहीं पड़ती वह अपनी मर्जी का मालिक होता है"।

उपर्युक्त संदर्भों को देखते हुए प्रस्तुत शोध में ट्वेल्थ फेल को ध्यान में रखते हुए, इस उपन्यास में भ्रष्टाचार, गरीबी, सामाजिक परिवेश, आर्थिक परिवेश आदि परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हुए विवेचन किया जाएगा। जिसके लिए वर्णात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा।

बीज शब्द: सिनेमा, उपन्यास, विवेचन, सामाजिक, भ्रष्टाचार, गरीबी, संघर्ष,

प्रस्वाना

मानव मस्तिष्क ने सदैव प्रगति के पथ पर चलते हुए नवीनता को तलाशने की कोशिश की और सदैव उस नवीनता में मनोरंजन को भी शामिल किया है। मनोरंजन के रूप में ही फिल्मों का भी आविष्कार हुआ है और यह फिल्में हमारे साहित्य और समाज को दर्शाती है इसलिए महावीर प्रसाद द्विवेदी ने "*साहित्य को समाज का दर्पण कहा है।*" भारतीय सिनेमा और हिंदी साहित्य का बहुत पुराना और बहुत गहरा संबंध रहा है। सन 1913 से ही भारतीय सिनेमा और साहित्य का संबंध चल रहा है क्योंकि 1913 में ही रविंद्र नाथ टैगोर द्वारा रचित गीतांजलि के लिए नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ तो दूसरी तरफ राजा हरिश्चंद्र दादा साहेब फाल्के द्वारा निर्देशित फिल्म जो राजा हरिश्चंद्र की कथा से ली गई, पहली मूक फिल्म बनी। "*सन 1913 में भारत में भारतीय फिल्म का श्री गणेश हुआ, जिसके जनक थे, मराठी भाषी धुंडीराज गोविंद फालके (दादा साहेब फालके) और फिल्म थी, राजा हरिश्चंद्रा*"*1* इससे पहले भी 1912 में 'पुडलिक' फिल्म जिसके निर्माता आर.जी. तोरणे थे, का प्रदर्शन हुआ था। इससे यह पता चलता है कि जब भारतीय साहित्य अपने रचनाओं से विश्व में प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहा था। तब साहित्य के माध्यम से उस समय सिनेमा जगत भी अपनी जमीन तलाशने में लगा था। आज सौ सवा सौ साल के बाद भी बहुत सा साहित्य रचा गया। जिस पर बहुत सी फिल्में भी बनी और बहुतों को पुरस्कृत भी किया गया। इसी उपन्यासों के क्रम में 12^{th} फेल उपन्यास ने आलोचकों की बहुत सारी सराहना बटोरी

साहित्य की समीक्षा

सिनेमा जगत में कई ऐसी फिल्में रची गई। जिसकी पृष्ठभूमि हिंदी साहित्य से ली गई और वह फिल्में दर्शकों को पसंद भी आई। जैसे प्रेमचंद के 'गोदान' (1936) उपन्यास पर बनी फ़िल्म 'गोदान' सन् 1963 में, भगवतीचरण वर्मा के 'चित्रलेखा' (1934) उपन्यास पर बनी फ़िल्म 'चित्रलेखा' सन् 1941 और 1964 में, मन्नू भंडारी की 'यही सच है' (2004) कहानी पर बनी फिल्म 'रजनीगंधा' सन् 1974 में, केशव प्रसाद मिश्र के 'कोहबर की शर्त' (1965) उपन्यास पर बनी फ़िल्म 'नदिया के पार' सन् 1882 में, भीष्म साहनी के 'तमस' (1973) उपन्यास पर बनी फिल्म 'तमस' सन् 1988 में, धर्मवीर भारती के उपन्यास 'सूरज का सातवां घोड़ा' (1952) उपन्यास पर बनी फिल्म 'सूरज का सातवां घोड़ा' सन् 1992 में, काशीनाथ सिंह के उपन्यास 'काशी का अस्सी' (2004) उपन्यास पर बनी फिल्म 'मोहल्ला अस्सी' सन् 2018 में, मुंबई 'फेबेल्स' (2011) उपन्यास पर बनी फिल्म 'बॉम्बे वेलवेट' सन् 2015 में, शेक्सपियर के नाटक 'हैमलेट' (1604) पर बनी फिल्म 'हैदर' सन् 2014 में, 'तीसरी कसम' (1956) कहानी पर बनी फ़िल्म 'तीसरी कसम' सन् 1966 में।

इस तरह से विश्व पटल पर यदि झांक कर देखा जाए तो सिनेमा जगत ने साहित्य के माध्यम से अपना कद बढ़ाया है और दर्शक के हृदय पटल पर अपना स्थान बनाने में कायम भी रहा है। साहित्य भले ही कुछ लोगों तक पहुंचा हो। लेकिन वही साहित्य फिल्मों के माध्यम से जन-जन तक पहुंचता है और लोगों द्वारा पसंद भी किया जाता है। जब पहली बार 1913 में आलमआरा लगी थी, तब भीड़ को नियंत्रित करने के लिए पुलिस को बुलानी पड़ी।

इसी फिल्म और उपन्यासों के श्रृंखला में कुछ फिल्में जैसे 1936 में प्रेमचंद द्वारा प्रकाशित गोदान उपन्यास हिंदी की महानतम कृतियों में से एक है। इस उपन्यास में ग्रामीण समाज को प्रमुख स्थान तो शहरी को गौण स्थान पर रखा गया है। इसमें प्रेमचंद किसान,महाजन, बेमेलविवाह, प्रेम विवाह, गरीबी और संघर्षशील स्त्री आदि के माध्यम से समाज के दर्पण को सामने रखते हैं। कोहबर की शर्त जो केशव प्रसाद मिश्र द्वारा रचित पूर्वी उत्तर प्रदेश के दो गांव बलिहार और चौबे छपरा का जनजीवन का गहन संवेदना और आत्मीयता के साथ चित्रित करते है। वही तमस भीष्म साहनी द्वारा रचित उपन्यास विभाजन की त्रासदी को दर्शाता हुआ पाठक के रोंगटे खड़े कर देता है और धर्मवीर भारती जो मार्क्सवादी धारणा को विकसित करते हुए सूरज का सातवां घोड़ा लिखते हैं जिसमें उन्होंने मध्य वर्ग और निम्न वर्ग के लोगों की समस्या को दर्शाया और यह भी बताया है कि उनकी समस्याओं का अंत नहीं होता है धुंधला जरूर हो जाता है। वही प्रतिवादी लेखक काशी नाथ सिंह द्वारा रचित काशी का अस्सी उपन्यास में काशीनाथ बनारस की सभ्यता और संस्कृति को दर्शाते हैं।

12^{th} फेल उपन्यास की विवेचना

उपर्युक्त संदर्भों को देखते हुए प्रस्तुत शोध में ट्वेल्थ फेल को ध्यान में रखते हुए, इस उपन्यास में भ्रष्टाचार, गरीबी, सामाजिक परिवेश, आर्थिक परिवेश आदि परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हुए विवेचन किया जाएगा। जिसके लिए वर्णात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा।

ट्वेल्थ फेल उपन्यास जो युवा लेखक अनुराग पाठक द्वारा लिखाया है, यह उपन्यास युवा पीढ़ी को प्रेरित करने में कोई कसर नही छोड़ीती है। इसमें कथाकार नायक के संघर्ष को दिखाता है कि कैसे वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में हर संभव प्रयास करता है और सफल भी होता है। लेकिन इसके आगे _ पीछे भी कई ऐसी घटनाएं होती है। जिसका विश्लेषण करना इस शोध पत्र का उद्देश्य है। लेखन चाहे उपन्यास का हो या कहानी का लेखक का एक व्यक्तिगत कर्म होता है जो स्वांत सुखाय के लिए होता है। *'युवा पटकथाकर और कवि निलय उपाध्याय का नजरिया है " बदलाव दर्शकों के रुचि को देखते हुए आते हैं क्योंकि रुचि बदली है इसलिए फिल्मी लेखन में बदलाव आया है अब युवा दर्शकों को ध्यान में रखकर फिल्में बन रही हैं साहित्यकार को यह ध्यान रखने की जरूरत नहीं पड़ती वह अपनी मर्जी का मालिक होत है।"2*

ट्वेल्थ फेल उपन्यास में भ्रष्टाचार

ट्वेल्थ फेल हमारे देश में भ्रष्टाचार बहुत बड़ी समस्या बनती जा रही है। भ्रष्टाचार चाहे जिस भी क्षेत्र में हो उसका मूल उद्देश्य नष्ट कर देता है। व्यक्ति चाहे जिस भी क्षेत्र में कार्य कर रहा है। उसका मूल कार्य न होकर बस पैसा कमाना हो जाता है। ट्वेल्थ फेल उपन्यास के माध्यम से लेखक ने यही दर्शाया है कि किस प्रकार से जौरा में सिर्फ पैसा कमाने के लिए लड़कों को पास कराया जा रहा है ना कि वहां की शिक्षा को दुरुस्त किया जा रहा है। जिससे वहां का हर लड़का लड़की उस काबिल बने कि कोई भी परीक्षा पास कर सके। *"स्कूल के संचालक नरेंद्र सिंह ने बहुत मेहनत के बाद 12th बोर्ड परीक्षा का सेंटर अपने स्कूल में कराया था अपनी स्कूल में केंद्र होने से वह खुलेआम नकल करने का वादा विद्यार्थियों से कर चुके थे।"3* लेकिन भ्रष्टाचार तो पैर सिकुड़ने वाला नहीं है। यह अपना विस्तार करता ही है चाहे शिक्षा हो या शासन। यदि व्यक्ति गरीब है तो शासन उसको निर्दोष होते हुए भी अपनी गिरफ्त में ले लेती है। लेकिन धन और बल है तो शायद नहीं ले सकती अपने चंगुल में। इस उपन्यास में भी बस का मालिक अपने पैसा कमाने के लिए किसी और को रोड पर गाड़ी चलाने नहीं देता है और उसको झुठे एक्सीडेंट केस में फंसा कर गाड़ी का चालान कटवा देता है। जिसका शिकार मुख्य रूप से उपन्यास का नायक भी होता है और उसके लक्ष्य का निर्धारण भी इसी भ्रष्टाचार के माध्यम से होता है। वहीं दूसरी तरफ नायक का पिता रामवीर शर्मा को कृषि विभाग के चारा के घोटाले मे फाइल पर हस्ताक्षर न करने और उसके विरोध करने पर उसके नाम से निलंबन का पत्र भेज देते हैं। और अंत में यह देखने को मिलता है कि रामवीर शर्मा को अपने बेटे के आईपीएस बनने तक यानी 4 साल तक न्याय नहीं मिलता है और जब उसको पता चलता है कि उसका पुत्र आइपीएस बन गया है तब और मजबूती के साथ वह अपने केस को कोर्ट से लड़ने को तैयार हो जाता है इससे पता चलता है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्यवाही करने के लिए सरकार का कितना धीमा रवैया है। और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए भी कोई कार्यवाही में कोई गतिविधि नहीं नजर आती है।

ट्वेल्थ फेल उपन्यास में सामाजिक

महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा कहे गए कथन साहित्य समाज का दर्पण है, जिसका शब्दशः वर्णन इस उपन्यास में किया गया है क्योंकि यह उपन्यास सच्ची घटना पर आधारित है। इसलिए हम कह सकते हैं कि यह समाज जो उपन्यास के माध्यम से हमारे सामने लेखक रखता है। वह बहुत पुराना नहीं है। 1997 से 2005 तक का ही है। फिर भी वहां की सामाजिक स्थिति आधुनिकता से परे बहुत दयनीय रहती हैं।

कहते हैं पानी हमारी जिवनदायिनी है और जब हमें पानी ही बहुत कष्ट से प्राप्त होता है तो अन्य भोज्य पदार्थों की तो बात ही हम नहीं कर सकते क्योंकि वह भी बहुत मुश्किल से ही मिलता है। इस संदर्भ में लेखक कहता है कि *"एक बुजुर्ग महिला को कुएं से पानी खींचने में कष्ट हो रहा था।"4* यहां जहां पानी इतनी मुश्किलों का सामना करने के बाद प्राप्त होता है। वहां बिजली की समस्या तो पुरजोर पकड़ी हुई है क्योंकि यह गांव मुरैना जिले से 30 किलोमीटर दूर रहता है सहुलिय बस इतना रहता है कि यह गांव तहसील से जिले तक जाने वाली सड़क से जुड़ा था इसलिए यातायात की थोड़ी सुविधा बनी रहती थी। इस संदर्भ में लेखक कहता है कि *"यह गांव तहसील को जिले से जोड़ने वाली सड़क के किनारे बसा था इसलिए आवागमन की सुविधा की दृष्टि से भाग्यशाली था।"5* उपर्युक्त विवेचन से पता चलता है कि यहां के सामाजिक स्थिति बहुत दयनीय रहती है और इसके सुधार के लिए कोई कार्यवाही नहीं दिखाई देता है बल्कि सभी नेता अपनी अपनी धाक जमाने में लगे रहती हैं।

ट्वेल्थ फेल उपन्यास में आर्थिक स्थिति

मनुष्य जब धरती पर जन्म लेता है। तब उसकी कई सारी मूलभूत आवश्यकताएं होती है। जिसको वह जीवन पर्यंत पूरी करने की चेष्टा करता है और उन्ही आवश्यकताओं के कारण अपने जीवन में कई परेशानियों का सामना भी करता है और जब उन आवश्यकताओं मे अर्थ यानी पैसा शामिल हो जाए तो आर्थिक तंगी भी उसे कहते हैं या यह कहे कि हमारे जीवन में चारों ओर घटित उन सभी समस्याओं को जो अर्थ यानी पैसे से जुड़ी रहती हैं उन्हें हम आर्थिक तंगी कह सकते हैं। इस उपन्यास की शुरुआत ही एक ऐसे परिवेश से की गई है। जहां नायक मार्च की सुबह में छत पर करवटें बदलता हैं। जिस मार्च में हल्की ठंड और रात में हल्की शीत लहर होती है और उस समय नायक छत पर सोता है और छत पर ही लालटेन की रोशनी में पढ़ता है। *"रात को 1:00 बजे तक लालटेन की रोशनी में पढ़ने के बाद भी उसके क्लाइमैक्स के कुछ पेज रह गए थे।"6* यहां लालटेन के

जिक्र से उस परिवेश का पता चल जाता है कि उस समय नायक एक ऐसे परिवेश से संघर्ष करता है। जहां बिजली की व्यवस्था नहीं है। नायक को अपनी आर्थिक तंगी से जुछते हुए ऑटो चलाने के लिए बाध्य होना पड़ता है और वह खुश भी होता है क्योंकि उससे उसको पैसे मिलते हैं। *"उसने कहा_ चिंता काय कर रही है अब तेरे मोडा कमाने लगे हैं।"7* इन स्थितियों को देखते हुए लगता है कि वहां के आर्थिक स्थिति बहुत निम्न स्तर की होती है। जिसे सही वहां की जनता हर दिन लड़ती है और अपना जीवन यापन करती हैं।

ट्वेल्थ फेल उपन्यास में गरीबी

गरीबी एक ऐसी बीमारी है जो मनुष्य को ना ही कायर बनती है और ना ही कमजोर। लेकिन भूख मनुष्य की ऐसी कमजोरी है जो उसके जिजीविषा को और अधिक मजबूत बनाता है और आगे कुछ कर गुजरने की चाहत पैदा कर देता है। इस उपन्यास में कथाकार ने नायक के इसी भुख को कुरेदा है। जब ललितपुर का कमरा बंद करके केशव घर चला जाता है और उस समय मनोज के पास ना खाने के पैसे होते हैं और ना सोने को छत। रात मंदिर के फुटपाथ पर भिखारीयों, कमजोर औरतें, बूढ़े बीमार आदमी, मैली गठरियो को देखकर मनोज अपना कष्ट तो भूल जाता है। लेकिन तीसरे दिन भूख पर काबू न कर पाने के कारण मनोज एक ललितपुर कॉलोनी में ही भोजनालय के पास जाकर काम के बदले भोजन मांगता है। *मनोज ने काउंटर पर बैठे मालिक से पूछा_ "मेरे पास पैसे नहीं है क्या मुझे मजदूरी के बदले आपके यहां भोजन मिल सकता है?"8*

जब हमको स्वतंत्रता प्राप्त हुई तो वह स्वतंत्रता हमको हमारी गुलामी से मिली थी। लेकिन हमको उन आवश्यकताओं और जीवन से जुड़ी जरूरत से आजादी कभी नहीं मिल सकती है। हिंदी उपन्यासों में हमारे व्यापक जीवन को दर्शाया गया है। जिसमें कई संघर्षों की गाथा सुनाई और दिखाई गई है। इसी संघर्ष में उपन्यासकार ने नायक के उस दृश्य का अंकन किया है। जब नायक अपने जीवन के पहियों को आगे घसकाते हुए अपने कर्तव्य पथ पर चलता है और संघर्ष की कहानी उस पुस्तकालय में रद्दियों और महान विद्जनों द्वारा लिखित किताबों के बीच रहकर, उनको पढकर पुस्तकालय का शौचालय साफ करता है सिर्फ इसलिए कि वह उसके खान और सोने की व्यवस्था हो जाए साथ में कुछ पैसे भी मिल जाए।

आर्थिक समस्या के सागर से मनुष्य जब गुजराता है। तो इस सागर की गहराई में जाकर उसका समाधान भी खोजता है और उसके समाधान के लिए मनुष्य कोई भी काम चाहे छोटा हो या बड़ा कर गुजरता है और अपनी समस्याओं का अंत करने का प्रयास करता है। इसी समस्याओं की गहराई को खत्म करने और अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होते हुए कथाकार ने नायक के एक और संघर्ष की गिनती कराई। जिसमें मनोज एक बार फिर अपने रहने और खाने की व्यवस्था में लगा हुआ आटे चक्की पर काम करता है और साथ में पढ़ाई भी करता है। लेखक कहता है *"नजदीक जाकर पांडे ने देखा तो वह एकदम चौंक गया आटा चक्की में काम करने वाला लड़का मनोज ही था।"9*

उपसंहार

कहते है जहां चाह है वहां राह है। कोई व्यक्ति यदि शिद्दत से किसी भी वस्तु या मुकाम को पाने में लग जाए तो वह देर से ही सही उसके कदम जरूर चूमती है। ट्वेल्थ फेल उपन्यास एक सच्ची घटना पर आधारित है। यह घटना तब तक जन-जन तक नहीं पहुंची थी। जब तक इस लेखक द्वारा प्रतिलेखन नहीं किया गया। इसे और सफलता तब मिली जब इस पर फिल्म बनी। लेखक की लेखनी में एक सामान्य सा लड़का रहता है। उस सामान्य से लड़के में उस प्रत्येक लड़के का संघर्ष झलकता है। जो इस आईपीएस और आईएएस की तैयारी के दौरान करता है। इस उपन्यास के माध्यम से हर उस वर्ग को प्रेरणा मिलती है। जो संघर्ष के दौर से गुजर रहा है और अपनी मंजिल पाने के प्रयास में हर दिन एक नया संघर्ष करते हुए एक नया अध्याय लिख रहा है। उपन्यास के कथनों के माध्यम से यह कह सकते हैं कि यह उपन्यास का नायक अपने संघर्षों से लड़ता हुआ अंतत: अपने लक्ष्य को चौथी प्रयास में प्राप्त कर लेता है। *"उसने श्रद्धा से कहा क्या हुआ श्रद्धा जल्दी बताओ उसकी बेचैनी उसके चेहरे से साफ झलक रही थी श्रद्धा ने बुझे हुए शब्दों में कहा मनोज। इतना कह कर श्रद्धा कुछ देर रुकी, तीन-चार सेकेंड तक वह मनोज का निराशा में डूबता चेहरा देखते रही। फिर श्रद्धा लगभग चीखते हुए बोली_ "तुम आईपीएस बन गए हो मनोज।"10* और नायक चाणक्य द्वारा कही गई इस पंक्ति_ "मेहनत का कोई विकल्प नहीं होता है।" सिद्ध करता है। साथ ही साथ हमारे आज के उस युवा पीढ़ी को प्रेरित करता ह जो इस संघर्ष की कड़ी से जद्दोजहद करते हुए भी असफल होते हैं। यह उपन्यास उनके लिए एक नई दिशा प्रदान करता है। और फिर से उठ कर खड़े होने की हिम्मत देता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. दिलचस्प, हिंदी फिल्मों का संक्षिप्त इतिहास, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020, पृष्ठ संख्या 14
2. दिलचस्प, हिंदी फिल्मों का संक्षिप्त इतिहास, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020, पृष्ठ संख्या 159
3. अनुराग पाठक, ट्वेल्थ फेल हारा वही जो लड़ा नहीं, नियोलिट पब्लिकेशन, इंदौर, 2019, पृष्ठ संख्या 14
4. अनुराग पाठक, ट्वेल्थ फेल हारा वही जो लड़ा नहीं, नियोलिट पब्लिकेशन, इंदौर, 2019, पृष्ठ संख्या 11
5. अनुराग पाठक, ट्वेल्थ फेल हारा वही जो लड़ा नहीं, नियोलिट पब्लिकेशन, इंदौर, 2019, पृष्ठ संख्या 12
6. अनुराग पाठक, ट्वेल्थ फेल हारा वही जो लड़ा नहीं, नियोलिट पब्लिकेशन, इंदौर, 2019, पृष्ठ संख्या 11
7. अनुराग पाठक, ट्वेल्थ फेल हारा वही जो लड़ा नहीं, नियोलिट पब्लिकेशन, इंदौर, 2019, पृष्ठ संख्या 24

International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

8. अनुराग पाठक, ट्वेल्थ फेल हारा वही जो लड़ा नहीं, नियोलिट पब्लिकेशन, इंदौर, 2019, पृष्ठ संख्या 41
9. अनुराग पाठक, ट्वेल्थ फेल हारा वही जो लड़ा नहीं, नियोलिट पब्लिकेशन, इंदौर, 2019, पृष्ठ संख्या 72
10. अनुराग पाठक, ट्वेल्थ फेल हारा वही जो लड़ा नहीं, नियोलिट पब्लिकेशन, इंदौर, 2019, पृष्ठ संख्या 175